Psychology MJC+MIC -9 Semester- 5

Process of Guidance and Counselling

परामर्श एवं निर्देशन की प्रक्रिया

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक N.D. कॉलेज

POSTER MAKER Poster Maker

प्रश्न 1. परामर्श से क्या अभिप्राय है ? परामर्श के मूलभूत सिद्धान्तों (Basic Principles) के बारे में विस्तार से बताइए।

अथवा

परामर्श प्रक्रिया (Counselling Process) के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

अथवा

परामर्श के विभिन्न सिद्धान्त क्या हैं ? आप किस सिद्धान्त को सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं और क्यों ? **अथवा**

परामर्श के सिद्धान्तों का ज्ञान परामर्शक के लिए क्यों आवश्यक है ?

उत्तर—परामर्श चाहने वाले व्यक्ति की कुछ समस्याएँ होती हैं जिनका समाधान वह स्वयं नहीं कर पाता है। इसके लिए उसे वैज्ञानिक मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस होती है। यही वैज्ञानिक मार्गदर्शन परामर्श (Counselling) कहलाता है। **जोन्स** (A. J. Jons, 1951) ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है कि परामर्श द्वारा परामर्श देने वाले और परामर्श पाने वाले के बीच व्यक्तिगत और गत्यात्मक सम्बन्ध स्थापित किए जाते हैं तथा परस्पर विचार-विनिमय द्वारा परामर्श लेने वाले व्यक्ति की समस्याओं को भली प्रकार समझकर उस व्यक्ति की इस प्रकार सहायता की जाती है कि वह स्वयं अपनी समस्याओं को समझ सके और सुलझा सके।

परामर्श प्रक्रिया के अन्तर्गत परामर्शदाता युक्तिपूर्ण तर्क (Rational Persuation), सुझाव (Suggestion), मनोविश्लेषण या अन्य किसी उपाय द्वारा व्यक्ति की समस्या के सम्बन्ध में अन्तर्दृष्टि (Insight) प्रदान करता है जिसके आधार पर वह स्वत: उसे सुलझाने में समर्थ होता है। बहुधा संवेगात्मक या व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु परामर्श दिया जाता है। परामर्शदाता का प्रशिक्षित होना आवश्यक होता है। परामर्श को सफल बनाने के लिए उसमें सुनिश्चित विशेषताओं का होना आवश्यक है। प्रार्थी के प्रति उसका व्यवहार सामाजिक, व्यावहारिक, स्नेहपूर्ण, सहयोगपूर्ण तथा मैत्रीपूर्ण होना चाहिए। उसमें सामान्य ज्ञान, दूसरों की जरूरतों को समझने की क्षमता; दूसरों के प्रति सम्मान की भावना, आत्म-विश्वास, पर्याप्त अनुभव, प्रशिक्षण तथा स्वस्थ व्यक्तित्व आदि गुण भी होने चाहिए। परीक्षण के लिए पर्याप्त उपकरणों की उपलब्धता भी परामर्श को सफल बनाने के लिए जरूरी है।

परामर्श के सिद्धान्त
(Principles of Counselling)

परामर्श का अर्थ स्पष्ट होने के बाद परामर्श के सिद्धान्तों को समझ लेना परामर्शदाता के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि परामर्श के सिद्धान्तों का ज्ञान परामर्श के क्रियात्मक या व्यावहारिक कार्य में अधिक सहायक होता है। परामर्श प्रक्रिया का सम्पादन यदि इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो परामर्श अधिक प्रभावकारी सिद्ध होता है। इन सिद्धान्तों का विवरण अग्रलिखित है—